Padma Bhushan

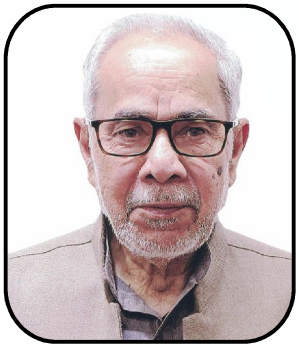

SHRI RAMBAHADUR RAI

Shri Rambahadur Rai is a distinguished journalist and public intellectual, with an extensive carrier spanning over four decades in journalism. He currently serves as the Group Editor of Hindustan Samachar, a multilingual news agency founded in 1948 and oversees the publication of the fortnightly magazine Yugvarta and the monthly journal Navotthaan.

2. Born on 1st July, 1946, in the village of Sonadi in the Ghazipur district of Uttar Pradesh, Shri Rai earned an M.A. in Economics in 1969 from Banaras Hindu University. During his student years in Varanasi, he participated in several movements including the liberation movement of East Pakistan (now Bangladesh).

3. Shri Rai's entry into journalism coincided with his association with the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) and his active role in the Bihar Movement led by Shri Jayaprakash Narayan in which he was arrested under the Maintenance of Internal Security Act (MISA). His commitment to political activism continued during the Emergency during which he was again incarcerated. He began his career in journalism as a correspondent for *Hindusthan Samachar* in Arunachal Pradesh. He subsequently obtained a postgraduate diploma in journalism from Rajasthan University. Over the years, he held various editorial positions at prominent Hindi newspapers, including *Jansatta* and *Navbharat Times*. Between 1986 and 2004, he covered proceedings in the Lok Sabha, eventually retiring as Editor of *Jansatta* in 2004. He has served as the editor of the Hindi fortnightlies *Pratham Pravakta* and *Yathaavat*. Presently, he contributes a regular column, *Lokayat*, in *Yugvarta* and writes a research article for every issue of *Manthan*. Additionally, he is a member of the editorial board of Manthan, a UGC-recognized academic journal dedicated to social and academic subjects.

4. A prolific writer, Shri Rai has authored and edited numerous works on political analysis, electoral reforms, constitutional studies, and contemporary socio-political and cultural issues. Among his notable contributions are *Rahbari Ke Sawaal* (a political biography of former Prime Minister Chandra Shekhar), *Manzil Se Zyada Safar* (a Q&A-style biography of Vishwanath Pratap Singh), *Shaashwat Vidrohi Rajneta-Acharya J.B. Kripalani,* and a concise biography of Jayaprakash Narayan. His editorial contributions include *Deendayal Upadhyaya Sampoorna Vangmaya*, *Lok Ka Prabhash* (a biography of Prabhash Joshi), *Hamare Bala Saheb Deoras*, *Bhanu Pratap Shukl-Vyaktitva Aur Vichar*; and R*ajneeti Ki Lok Sanskriti-Nimitt Govindacharya.* One of his most widely discussed works is *Bharatiya Samvidhan: Ankahi Kahaniyan* (The Indian Constitution: Untold Stories), which provides an in-depth analysis of the constitution-making process based on the Constituent Assembly debates.

5. Shri Rai has been actively involved in academic and policy discussions. He was nominated as a member of the Executive Council of the University of Delhi by the President of India and served as a member of the selection committee for the Best Parliamentarian award. He is also a member of the Rajghat Samadhi Committee. He currently holds the position of Chancellor at Shri Guru Govind Singh Tri-Centenary University (SGTU), Gurugram. Since 2016, he has also served as the Chairman of the Trust of the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous institution under the Ministry of Culture, Government of India.

6. Beyond journalism, Shri Rai has been an active participant in social movements, including the Right to Information (RTI) movement and the *'Know the Constitution'* campaign initiated by Pragya Sansthan, where he serves as a trustee. His engagements further extend to his roles as Managing Trustee of Prabhash Parampara Nyas and Chairman of SPRF Trust. He is also a trustee of the Acharva J.B. Kripalani Memorial Trust.

7. For his contributions to journalism, literature, and public discourse, Shri Rai has received numerous accolades. In 2015, he was conferred the Padma Shri. Additionally, he has been awarded an honorary Doctor of Letters (D.Litt.) degree by Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh.

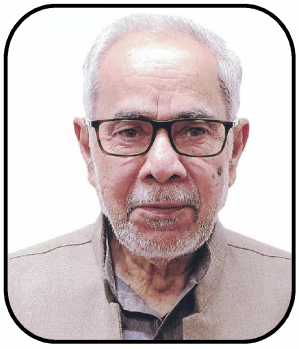

श्री रामबहादुर राय

श्री रामबहादुर राय प्रतिष्ठित पत्रकार और लोक बुद्धिजीवी हैं, जिन्हें पत्रकारिता में चार दशकों से अधिक का व्यापक अनुभव प्राप्त है। वह वर्तमान में वर्ष 1948 में स्थापित बहुभाषी समाचार एजेंसी हिंदुस्तान समाचार के समूह संपादक के रूप में कार्य करते हैं और पाक्षिक पत्रिका युगवार्ता और मासिक पत्रिका नवोत्थान के प्रकाशन की देखरेख करते हैं।

2. 1 जुलाई, 1946 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के सोनाड़ी गांव में जन्मे, श्री राय ने वर्ष 1969 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए की डिग्री प्राप्त की। वाराणसी में अपने छात्र जीवन के दौरान उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के मुक्ति आंदोलन सहित कई आंदोलनों में भाग लिया।

3. श्री राय का पत्रकारिता में प्रवेश अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से उनके जुड़ाव और श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका के साथ हुआ, जिसमें उन्हें आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम (एमआईएसए) के तहत गिरफ्तार किया गया था। राजनीतिक सक्रियता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आपातकाल के दौरान भी जारी रही, जिसके दौरान उन्हें फिर से जेल में डाल दिया गया। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में हिंदुस्तान समाचार के संवाददाता के रूप में पत्रकारिता में अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। इन वर्षों में, उन्होंने जनसत्ता और नवभारत टाइम्स सहित प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों में विभिन्न संपादकीय पदों पर कार्य किया। वर्ष 1986 से 2004 के बीच, उन्होंने लोकसभा की कार्यवाही को कवर किया और 2004 में अंततः जनसत्ता के संपादक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने हिंदी पाक्षिक प्रथम प्रवक्ता और यथावत के संपादक के रूप में भी काम किया है। वर्तमान में, वह युगवार्ता में एक नियमित स्तंभ, लोकायत, लिखते हैं और मंथन के प्रत्येक अंक के लिए एक शोध लेख लिखते हैं। इसके अतिरिक्त, वह मंथन के संपादकीय बोर्ड के सदस्य हैं, जो सामाजिक और शैक्षणिक विषयों पर समर्पित यूजीसी–मान्यता प्राप्त अकादमिक पत्रिका है।

4. एक सफल लेखक के रूप में, श्री राय ने राजनीतिक विश्लेषण, चुनाव सुधार, संवैधानिक अध्ययन और समकालीन सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर कई रचनाओं का लेखन और संपादन किया है। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में रहबरी के सवाल (पूर्व प्रधान मंत्री चंद्र शेखर की राजनीतिक जीवनी), मंजिल से ज्यादा सफर (विश्वनाथ प्रताप सिंह की प्रश्नोत्तर शैली में जीवनी), शाश्वत विद्रोही राजनेता–आचार्य जे. बी. कृपलानी, और जयप्रकाश नारायण की एक संक्षिप्त जीवनी शामिल हैं। उनके संपादकीय योगदानों में दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वांग्मय, लोक का प्रभाष (प्रभाष जोशी की जीवनी), हमारे बाला साहेब देवरस, भानु प्रताप शुक्ल–व्यक्तित्व और विचार; और राजनीति की लोक संस्कृति–निमित्त गोविंदाचार्य शामिल हैं। उनकी सबसे चर्चित कृतियों में से एक भारतीय संविधानः अनकही कहानियाँ है, जो संविधान सभा की बहसों के आधार पर संविधान निर्माण प्रक्रिया का गहन विश्लेषण प्रदान करती है।

5. श्री राय अकादमिक और नीतिगत चर्चाओं में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं। उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के सदस्य के रूप में नामित किया गया था और उन्होंने सर्वश्रेष्ठ सांसद पुरस्कार के लिए चयन समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया। वह राजघाट समाधि समिति के सदस्य भी है। वह वर्तमान में श्री गुरु गोविंद सिंह त्रि–शताब्दी विश्वविद्यालय (एसजीटीयू), गुरुग्राम में कुलाधिपति के पद पर हैं। वर्ष 2016 से, उन्होंने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया है।

6. पत्रकारिता से इतर, श्री राय सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं, जिनमें सूचना का अधिकार (आरटीआई) आंदोलन और प्रज्ञा संस्थान द्वारा शुरू किया गया 'संविधान को जानो' अभियान शामिल है, जहां वह ट्रस्टी के रूप में कार्य करते हैं। उनके कार्यों में प्रभाष परम्परा न्यास के प्रबंध ट्रस्टी और एसपीआरएफ ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका भी शामिल हैं। वह आचार्य जे. बी. कृपलानी मेमोरियल ट्रस्ट के ट्रस्टी भी हैं ।

7. पत्रकारिता, साहित्य और लोक विमर्श में उनके योगदान के लिए, श्री राय को कई पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ष 2015 में, उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्हें अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश द्वारा मानद डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी. लिट.) की उपाधि से भी सम्मानित किया गया है।